Online at: https://researchtrendsjournal.com
ISSN No: 2584-282X
Indexed Journal, Impact Factor: 6.1
Peer Reviewed Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 5; 2025; Page No. 22-24

IASE (deemed to be university)

Special Issue of International Seminar (23rd - 24th August, 2025)
On the Topic
Indian Knowledge System (IKS): Challenges & its Application in Higher Education for Sustainable Development
By
Faculty of Education, IASE (DU), Sardarshahar, Churu, Rajasthan - 331403

ऑनलाइन शिक्षा बनाम पारंपरिक शिक्षा प्रणाली

श्रीमती कमला जाट

शोधार्थी, मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17197975

Corresponding Author: श्रीमती कमला जाट

सारांशः

शिक्षा का मनुष्य के जीवन में विशिष्ट स्थान है। शिक्षा द्वारा मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करके उसके व्यवहार का परिमार्जन एवं परिष्करण किया जाता है। आज हम ई–कॉमर्स, ई–बैंकिंग, ई–शॉपिगं, ई–कनेक्ट आदि के उपरातं अब कोविड–19 महामारी के कारण हम ज्ञानार्जन के लिए भी ई–लर्निंग अथवा ई–शिक्षा को भविष्य के मार्ग के रूप में देख रहे हैं। सभी प्रकार की ई–शिक्षा में इलेक्ट्रॉनिक, इंटरनेट व अन्य संचार समर्थित उपकरणों का बहुविध और बहुतायत में प्रयोग किया जाता है। इंटरनेट की दुनिया विशाल है और सूचनाओं से भरी हुई है, जिनमें से अधिकांश निःशुल्क में ही उपलब्ध है। डिजिटल शिक्षा के उद्भव ने छात्रों के लिए ज्ञान के इस खजान` का पता लगाना और उसका उपयोग करना सम्भव बना दिया है। पारम्परिक शिक्षा, सदियों से ज्ञान संचरण का आधार रही है। पारम्परिक शिक्षा हेतु विद्यालय मात्र एक अकादमिक शिक्षण नहीं है। यह एक सामाजिक संस्था भी है। इस प्रकार, डिजिटलीकृत शिक्षा की तुलना में पारम्परिक शिक्षा भी अपनी विशिष्टता रखती है। आज के आपातकालीन समय में डिजिटल शिक्षा जरूरी तो है, लेकिन इसका उपयोग एक निश्चित सीमा तक और किसी की देख–रेख में ही हानेा चाहिए। जिससे इस तकनीक का छात्रों को पूरा लाभ मिले, वहीं उनका मानसिक, शारीरिक और चारित्रिक विकास भी बाधित न हो। हमें इस बात को भलीभाति समझ लेना चाहिए कि यह एक वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली नहीं बल्कि केवल अनुपूरक प्रणाली ही हो सकती है। पारम्परिक शिक्षा छात्रों के उज्ज्वल और सफल भविष्य क`लिए सहायक सिद्ध होती है। हालांकि ऑनलाइन शिक्षण कई लाभ प्रदान करने है। लेकिन छात्रों को सही दिशा–निर्देश प्रदान करने के लिए पारम्परिक शिक्षा की अतुलनीय भूमिका है।

मूलशब्दः शिक्षा, ई–कॉमर्स, ई–बैंकिंग, ई–शॉपिगं, ई–कनेक्ट, इलेक्ट्रॉनिक, इंटरनेट

प्रस्तावना

शिक्षा का मनुष्य के जीवन में विशिष्ट स्थान है। शिक्षा द्वारा ही राष्ट्रीय सामाजिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास संभव है। शिक्षा द्वारा मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करके उसके व्यवहार का परिमार्जन एवं परिष्करण किया जाता है। शिक्षा कुछ नया नहीं गढ़ती है, बल्कि जीव में अन्तर्निहित ज्ञान पुंज को अनावृत कर उसे उजागर कर देती है और यही शिक्षा का निहितार्थ भी है। इसी तथ्य को रेखाकिंत करते हुए स्वामी विवेकानन्द ने कहा था – "मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।" मानवीय परिवेश में शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य जीवन की अखण्ड प्रक्रिया को अनुभूत करने तथा जीवन के उदात्त मूल्यों की खोज करने व समझने में व्यक्ति की सहायता करना ही है। शिक्षा वह बीज है, जो व्यक्ति में बोधत्व के भाव को अंकुरित कर उसके स्व को निखारता है। इस स्वत्व से ही व्यक्ति की मेधा प्रस्फुटित होती है। ईश्वर द्वारा प्रदत्त दिव्य गुणों से युक्त बुद्धि को वेदो में मेधा कहा गया है यह मेधा ही व्यक्ति को पूर्ण समन्वित दृष्टि प्रदान कर उसे विवेकशील या प्रज्ञावान मनुष्य बनाती है। भारतीय अवधारणा में शिक्षा का उद्देश्य मात्र जीविकोपार्जन तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि ज्ञानार्जन द्वारा व्यक्ति को आध्यात्मिकता के दिव्य गुणों से युक्त कर उसे धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष के चारों पुरूषार्थों के पालनयोग्य बनाना भी रहा। शिक्षा के प्रति भारतीय दृष्टिकोण

अत्यन्त व्यापक एवं सूक्ष्म रहा है। भारतीय शैक्षिक चिन्तन मानवीय मूल्यों को केन्द्र में रखकर विकसित हुआ है। शिक्षा के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य माना गया है। इसके लिए भारतीय शैक्षिक परम्परा में आश्रम व्यवस्था की अनिवार्यता सुनिश्चित की गई। भारतीय ऋषियों द्वारा प्रतिपादित आश्रम व्यवस्था में प्रथम आश्रम ब्रह्मचर्य आश्रम को शिक्षा को ही समर्पित किया है। इसी आश्रम में विद्यार्थी को जीवन के अन्य आश्रमों यथा गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और संन्यास आश्रम के कर्तव्यों के परिपालन के लिए भी दक्ष बना दिया जाता था। इस प्रकार भारतीय शैक्षिक चिन्तन में सम्पूर्ण जीवन शिक्षा के लिए एवं शिक्षा को सम्पूर्ण जीवन के लिए माना गया है। प्राचीन भारतीय सभ्यता विश्व की सर्वाधिक रोचक तथा महत्वपर्ण सभ्यताओं में एक है। इस सभ्यता के समुचित ज्ञान के लिए हमें इसकी शिक्षा पद्धति का अध्ययन करना आवश्यक है। जिसने इस सभ्यता को चार हजार वर्षों से भी अधिक समय तक सुरक्षित रखा, उसका प्रचार–प्रसार किया तथा उसमें संशोधन किया। भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति में हमें अनौपचारिक तथा औपचारिक दोनों प्रकार के शैक्षणिक केन्द्रों का उल्लखे प्राप्त होता है। औपचारिक शिक्षा मन्दिर, आश्रमों और गुरुकुलों के माध्यम से दी जाती थी। ये ही उच्च शिक्षा के केन्द्र भी थे। जबकि परिवार पुरोहित, पण्डित, सन्यासी और त्यौहार प्रसंग आदि के माध्यम से अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त होती थी। प्राचीनकाल में भारत में गुरुकुल और आश्रम के शिक्षा की परम्परा रही है लेकिन कालान्तर में इसमें परिवर्तन होते गए और शिक्षा व्यवस्था ने अनके सोपान तय किए। वर्तमान समय में स्कूली शिक्षा नवयुगीन साधनों और युक्तियों से सुसज्जित होती जा रही है। स्मार्ट बोर्ड, मार्करपेन, लेजर, प्वाइंटर एक नई बात नहीं रह गई है। स्लाइड प्रोजेक्टर और एल.सी.डी. प्रोजेक्टर अब हर कक्षा की अनिवार्यता बनते जा रहे है। अभी विगत एक–दो वर्षों से विशेषकर कोरोना संक्रमण के दौरान से पढ़ाई की एक आधुनिक तकनीकी विकसित हुई जिसे हम ऑनलाइन शिक्षण के नाम से जानते हैं। विशेषकर नई शिक्षा नीति २०२० ने भी इस तकनीकी के द्वारा शिक्षण में विशेष महत्व दिया है। जिसके कारण विगत दिनों में इसका प्रचलन विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक दृष्टिगोचर प्रतीत होता है। विगत वर्षों में कोरोना संक्रमण ने संपूर्ण विश्व को त्रस्त कर दिया। लाखों लोग इसके चपेट में आए और कई लोग इसके शिकार हुए। कोरोना विषाणु ने विश्व के साथ–साथ भारत देश की भी अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान पहुंचाया है। इसी के साथ बच्चों के दैनंदिन जीवन और शिक्षण को प्रभावित करते हुए उनके भविष्य को चुनौतीपूर्ण बना डाला है।

आज हम ई–कॉमर्स, ई–बैंकिंग, ई–शॉपिगं, ई–कनेक्ट आदि के उपरांत अब कोविड–19 महामारी के कारण हम ज्ञानार्जन के लिए भी ई–लर्निंग अथवा ई–शिक्षा को भविष्य के मार्ग के रूप में देख रहे हैं। सभी प्रकार की ई–शिक्षा (चाहे वह शिक्षण संस्थान द्वारा हो, व्यावसायिक प्रशिक्षण का हिस्सा हो या दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम के रूप में हो) में इलेक्ट्रॉनिक, इंटरनेट व अन्य संचार समर्थित उपकरणों का बहुविध और बहुतायत में प्रयोग किया जाता है। वेब आधारित शिक्षा, कंप्यूटर–आधारित शिक्षा, आभासी कक्षाएं और अन्य डिजिटल माध्यम इसके विविध रूप हैं जो स्वाभाविक तौर पर क्रियात्मक होते हैं। इनका उद्देश्य शिक्षक तथा शिक्षार्थी के व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास एवं ज्ञान का संवर्धन करना, पाठ की गुणवत्ता बढ़ाना, सीखने के प्रति रुचि पैदा करना, मूल्यांकन तथा प्रतिक्रिया के प्रति निष्पक्षता को बनाए रखना है। पाठ्य सामग्री को इन्टरनेट, इंट्रानेट, एक्सट्रानेट, कृत्रिम उपग्रह प्रसारण, ऑडियो–विडियो, इंटरैक्टिव टेलीविजन, सी–डी इत्यादि के माध्यम से लिखित, मौखिक, श्रव्य, दृश्य, एनीमेशन आदि के रूप में अध्येता तक पहुँचाया जाता है। अतः प्रस्तुत शोध का उद्देश्य भारतीय पारम्परिक शिक्षा एवं वर्तमान ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था के प्रत्येक पहलुओं पर दृष्टिपात करेंगे।

पारम्परिक शिक्षा व्यवस्थाः पारम्परिक शिक्षा को अपने आप में परिभाषित नहीं किया जा सकता क्योंकि यह सदैव स्थान और समय के अनुसार परिवर्तनशील है। कोई भी शिक्षण पद्धति जो स्थापित शिक्षण और सीखने के तरीकों पर ध्यान केन्द्रित करती है वह पारम्परिक शिक्षा हो सकती है। पारम्परिक शिक्षा पर संस्कृति एवं क्षेत्रीय तत्वों का प्रभाव अधिक रहता है। पारम्परिक शिक्षा, विद्यालय या विश्वविद्यालयों में एक कक्षा में एक शिक्षक के माध्यम से होता है। शिक्षक कोई भी एक अध्याय लेकर छात्रों के सामने पढ़ाता है। इस प्रकार के शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक विभिन्न उपकरणों के द्वारा अपने अध्याय को प्रस्तुत करता है, जैसे–चॉक, मार्कर तथा ब्लैक बोर्ड या व्हाइट बोर्ड इत्यादि। इसी के साथ–साथ विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के बारे भी जानकारी उपलब्ध कराया जाता है।

ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्थाः ऑनलाइन शिक्षा जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है– इटं रनेट द्वारा व्यवस्था। यह शिक्षा इंटरनेट के माध्यम से होती है जिसमें शिक्षक दूरस्थ माध्यम से शिक्षा प्रदान करता है। इसमें शिक्षक एवं छात्र के लिए समय अथवा स्थान की प्रतिबद्धता नहीं होती। शिक्षक अध्याय को वीडियों, टेक्स्ट अथवा चित्रों के द्वारा अध्यापन कराता है। ऑनलाइन शिक्षा के लिए इंटरनेट का होना बहुत आवश्यक है। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक समर्थित शिक्षा और अध्यापन के रूप में परिभाषित किया जाता है। जो स्वाभाविक तौर पर क्रियात्मक होते है और जिनका उद्देश्य शिक्षार्थी के व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास और ज्ञान के सन्दर्भ में ज्ञान के निर्माण को प्रभावित करना है।

पारम्परिक शिक्षा बनाम ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्थाः आशाजनक भविष्य का स्वप्न कोरोना (कोविड–19) महामारी ने मानव अस्तित्व पर अनपेक्षित, अप्रत्याशित रूप से प्रतिघात किया। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा इसके प्रभावी संक्रमण को रोकने एवं मानव प्रजाति को सुरक्षित रखने के लिए 22 मार्च 2020 को सम्पूर्ण विश्व में इसे महामारी घोषित करते हुए सभी देशों को लॉकडाउन लगाने का आदेश दिया।'' जिसके फलस्वरूप मानवीय क्रियाविधियों को संचालित करने हेतु ऑनलाइन आधारित प्रणाली का सहारा लिया गया। इस प्रतिमान विस्थापन ने जहाँ बहुत–सी असुविधाओं को जन्म दिया है तो वहीं हमें न्यू नार्मल में विकसित होने एवं भविष्य में सम्पूर्णता में वृद्धि का अवसर भी प्रदान किया। ऑनलाइन या आभासी शिक्षा अनिवार्य रूप से कौशल एवं ज्ञान का कम्प्यटूर एवं नेटवर्क समर्थित अंतरण है। ई–शिक्षा या ऑनलाइन शिक्षा इलेक्ट्रानिक अनुप्रयोगों और सीखने की प्रक्रियाओं के उपयोग को संदर्भित करता है। ई–शिक्षा के अनुप्रयोगों और प्रक्रियाओं में वेब– आधारित शिक्षा कम्प्यटू र आधारित शिक्षा, आभासी कक्षाएँ और डिजिटल सहयोग शामिल हैं। पाठ्य–सामग्रियों का वितरण इंटरनेट, इंट्रानेट, एक्स्ट्रानटे, आडियोंया वीडियों टपे, उपग्रह टीवी और सीडी रोम के माध्यम से किया जाता है। ई–शिक्षा के समानार्थक शब्दों के रूप में सीबीटी (CBT) कम्प्यूटर आधारित प्रशिक्षा, आईबीटी (IBT) इंटरनेट आधारित प्रशिक्षा या डब्ल्यूबीटी (WBT) वेब आधारित प्रशिक्षा जैसे संक्षिप्त शब्द रूपों का प्रयोग किया जा सकता है। पारम्परिक शिक्षा और ऑनलाइन शिक्षा के कुछ प्रमुख बिन्दुओं पर एक दृष्टि डालना आवश्यक हैं, जो इस प्रकार से है–

पारम्परिक शिक्षा सक्रिय सीखने के अवसर प्रदान करती है। पारम्परिक कक्षाएँ छात्र को एक सक्रिय शिक्षण पद्धति प्रदान करती है जिन्हें कक्षा में उपस्थित रहकर सक्रिय भागीदारी निभानी होती है। शिक्षकों की देख–रेख में छात्रों को कक्षा के भीतर शैक्षणिक समस्याओं को हल करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है। वर्तमान समय में, छात्र इंटरनेट या ऑनलाइन अधिन्यास या असाइनमंटे सहायकों से बहुत अधिक सहायता लेते हैं जिससे असाइनमेंट प्रक्रिया अनावश्यक हो जाती है। साथ ही छात्र कोई भी नया कौशल नहीं सीखते हैं।

पारम्परिक ज्ञान सामाजिक शिक्षा सिखाता है। पारम्परिक शिक्षा किसी व्यक्तिगत व्यक्ति पर ध्यान केन्द्रित नहीं करती है। पारम्परिक जान छात्रां` को सीखने के समान अवसर प्रदान करती है। जबकि ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था में बच्चों के लिए समुदाय में सीखने के अवसर का अभाव है।

पारम्परिक शिक्षा अनुशासन को सुगम बनाती है। पारम्परिक कक्षा में एक शिक्षक छात्र को नियमबद्ध होकर अपना गृहकार्य करना सिखाता है। छात्र एक पारम्परिक रूप से विद्यालय जाता है। वह अनुशासन भी सीखता है, जो शैक्षणिक और व्यावसायिक भविष्य में सफलता की कुंजी है। जबकि ऑनलाइन शिक्षा में स्थान की कोई बाध्यता नहीं है जिससे छात्रों में अनुशासन का अभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

पारम्परिक शिक्षा संचार कौशल को बढ़ाती है। जब छात्र विभिन्न गतिविधियों में भाग लेते हैं, तो वे दूसरों के साथ बातचीत करते है और अपने संचार कौशल में सुधार करना सीखते है। जबकि ऑनलाइन पाठ्यक्रम व्यक्तिगत शिक्षा प्रदान कर सकते हैं, लेकिन वे छात्रों को उनके संचार कौशल को बेहतर बनाने में सहायता नहीं कर सकते। अपने संदेश को सम्प्रेषित करने के लिए कलम और कागज से लिखना, स्पष्ट और धारा प्रवाह तरीके से बोलने से अलग है। पारम्परिक शिक्षा तथा ऑनलाइन शिक्षा दोनों ही शिक्षण के लिए प्रभावपर्ण है। ऑनलाइन शिक्षण कई जगहों पर अधिक प्रभावशील हो सकता है, यह छात्र के द्वारा लिए गए विषय पर निर्भर करता है कि वह इस विषय को सीखने के लिए ऑनलाइन कक्षा से कितना जुड़ पाया है। जबकि पारम्परिक कक्षा में शिक्षक प्रत्येक क्षण छात्र के व्यस्त होने की जांच करता है और छात्रों से उस विषय से सम्बन्धित प्रश्न करने के लिए भी प्रोत्साहित करता है।

ऑनलाइन शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियाँ

ऑनलाइन शिक्षा प्रारम्भ से ही वैकल्पिक शिक्षा का एक प्रतिरूप रहा है। जिसके कारण इस पर ध्यान प्रारम्भ से ही कम रहा है। लेकिन कोविड–19 महामारी ने इसे मुख्य शिक्षा की धारा में जोड़ते हुए सभी देशों की ऑनलाइन शिक्षा की स्थिति एवं संचालन क्षमता को सभी के समक्ष प्रस्तुत कर दिया है। जिसे विकसित देश से लेकर भारत समेत विकासशील देश भी शामिल है। जिसमें डिजिटल उपकरणों, संसाधनों, इन्टरनेट कनेक्टिविटी तथा उपयुक्त ऑनलाइन परिवेश की कमी जैसी सामान्य चुनौतियों के साथ–साथ कुछ विशिष्ट चुनौतियाँ भी है।

भारत में ग्रामीण बाहुल्य क्षेत्र हाने के कारण भी ऑनलाइन परिवेश की उपयुक्तता विचारणीय है। डिजिटल उपकरण की उपलब्धता वाले क्षेत्रों में भी ऑनलाइन शिक्षा के प्रति जागरुकता तत्परता में कमी, संचालन कौशल एवं प्रशिक्षण में कमी पायी गयी है। इसके अतिरिक्त शिक्षार्थी–शिक्षक संलग्नता, तनावपूर्ण वातावरण, बिजली आपूर्ति, विषय–वस्तु के प्रस्तुतीकरण की समस्या, अकुशल, शैक्षणिक ढांचा, डिजिटल थकान, डिजिटल डर एवं मूल्यांकन के सीमित अवसर आदि अनेक नकारात्मक कारक भी ऑनलाइन शिक्षा को दूषित करते है।

निष्कर्ष

तकनीकी विकास एवं बदलती शैक्षिक प्रवृत्तियों ने माध्यमिक शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। वर्तमान समय में ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने एवं विद्यार्थियों को शिक्षण प्रदान करने की मांग में वृद्धि हुई है। कोविड–19 महामारी ने शिक्षा क्षत्रे सहित सभी क्षत्रों में नवाचार को नया आयाम दिया है। ऑनलाइन या आभासी शिक्षा ने कक्षा की बाधाओं को तोड़ दिया है। कुछ लोगों का मानना है कि ऑनलाइन शिक्षण वातावरण की अपनी पहुँच है। लचीलापन और लागत प्रभावशीलता के कारण पारम्परिक कक्षा के वातावरण से बेहतर है। वहीं कुछ अन्य लोगों का मानना है कि पारम्परिक शिक्षण को डिजिटल शिक्षण दवारा प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता है। उदाहरणार्थः शोध संबंधी सामग्री एकत्रित करना हो अथवा किसी नवीन विषय के बारे में जानने के लिए पुस्तकालय का सहारा लिया जाता है। पारम्परिक शिक्षा में जानकारी प्राप्त करने के लिए पुस्तकालय सर्वोतम साधन है जबकि वर्तमान समय डिजिटलीकृत शिक्षा व्यवस्था में इंटरनेट एक सरल और सुलभ मार्ग है। पुस्तकालय में उस विषय को जानकारी को ढूँढने की तुलना में इंटरनेट पर खोज करना कहीं अधिक आसान और सुविधाजनक है। लेकिन क्या पुस्तकालय का स्थान कभी इंटरनेट ले सकता है?, क्योंकि एक ऐसा विषय है जो इंटरनेट कभी भी पूर्णता को प्राप्त करने में सक्षम नहीं हो सकता और वह है– प्रामाणिकता। यह अतिशयोक्ति नहीं होगा कि पारम्परिक शिक्षा अभी भी सफलता की कुंजी है।

पारम्परिक शिक्षा हतु विद्यालय मात्र एक अकादमिक शिक्षण नहीं है। यह एक सामाजिक संस्था भी है। इस प्रकार, डिजिटलीकृत शिक्षा की तुलना में पारम्परिक शिक्षा भी अपनी विशिष्टता रखती है। आज के आपातकालीन समय में डिजिटल शिक्षा जरूरी तो है, लेकिन इसका उपयोग एक निश्चित सीमा तक और किसी की देख–रेख में ही होना चाहिए। जिससे इस तकनीक का छात्रों को पूरा लाभ मिले, वहीं उनका मानसिक, शारीरिक और चारित्रिक विकास भी बाधित न हो। हमें इस बात को भलीभाति समझ लेना चाहिए कि यह एक वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली नहीं बल्कि केवल अनुपूरक प्रणाली ही हो सकती है। यह मूल व्यवस्था नहीं, सहायक व्यवस्था ही है। भविष्य में इसका पूर्ण प्रयोग नहीं आनुषंगिक प्रयोग ही श्रेयस्कर होगा।

सन्दर्भ

1. डॉ. रामविलास, "ऑनलाईन शिक्षा भविष्य की जरूरत और चुनौतियाँ", International Journal of Innovative Social Science & Humanities Research ISSN: 2349-1876 (Print)
2. वर्मा, अभिषेक, "मुख्य शिक्षा में ऑनलाईन शिक्षा की भूमिका" Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies, ISSN: 2278-8808, Published on 1 May, 2022
3. आधुनिक विश्व के संदर्भ में भारतीय शिक्षा, रायपुरः राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छतीसगढ़, 2021.
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।, 2020.
5. शर्मा के. प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली (इकाई–24), नई दिल्लीः इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2021. https://www.egyankosh.ac.in/handle/123456789/71644

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.